कोई देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान महज़ उन्माद में नहीं करता। वे हमारी उम्र के लोग थे जिनके सामने उनकी पूरी ज़िंदगी पड़ी थी जिसे ठुकरा कर उन्होंने क्रांति का जोखिम भरा मार्ग चुना था। वे किस भावना से प्रेरित थे?

इन सवालों के जवाब ढूंढने की कोशिश में यह नाटक लिखा गया है। इन सवालों का सीधा सरल जवाब देश प्रेम हो सकता है। पर हम इससे संतुष्ट नहीं थे। गहराई से पड़ताल करने पर हमें पता चला कि क्रांतिकारियों ने भी स्वराज, हिंसा, स्वतंत्रता को अपने विचारों से परिभाषित किया है। अगर हमें क्रांतिकारियों के तरीकों को समझना है तो हमें उनकी दी गई परिभाषा को जानना होगा।

नाटक लिखने की प्रक्रिया में हमने महसूस किया कि उनकी विचारधारा को बेहतर समझने के लिए हमें उनके व्यक्तिगत जीवन को देखना होगा। हमने पाया कि व्यक्तिगत जीवन में उन्होंने उन आदर्शों को आत्मसात् किया था जिनके विरुद्ध आज उनको खड़ा किया जाता है।

दूसरी ओर, क्रांतिकारी विचारधारा को गांधीवादी विचारधारा के विरोध में दिखाना भी भ्रामक है। अगर स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास को गहराई से देखें तो समझ आता है कि ये दोनों विचारधाराएँ परस्पर संवाद से बनीं और मज़बूत हुईं। कई बातों में इनमें मतभेद था और कई बातों में सहमति भी। हमने अपने नाटक में इस बहस को भी दिखाने की कोशिश की है।

आज़ादी के अमृत महोत्सव में इन क्रांतिकारियों के ज़रिए हमने आज़ादी का अपना मानी तलाशने की कोशिश की है.

नाटक के बारे में

स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने वालों ने यह जरूर सोचा होगा कि आज़ादी कैसी होगी और किन के लिए होगी? वो सपना आज कितना साकार हुआ दिखता है?

क्या भगत सिंह ने ऐसे भारत का सपना देखा था जिसमें कर्ज़ से तंग किसान आत्महत्या को मजबूर हो जाए? क्या अशफ़ाक ने सांप्रदायिकता की आग में झुलसते भारत की संकल्पना की थी? क्या शचिन्द्रनाथ सान्याल ऐसा भारत चाहते थे जिसमें जूझते नौजवान आत्महत्या करने लगें? ये सवाल परेशान करते हैं और अशांत भी।

हमने क्रांतिकारियों के नज़रिए से यह देखने और दिखाने की कोशिश की है कि उन्होंने कैसे भारत की संकल्पना की थी।

सवाल आता है कि क्रांतिकारियों के नजरिए से क्यूं?

लोगों के मन में क्रांतिकारियों की उग्रवादी छवि बनी रहती है, जबकि सच्चाई इससे कहीं दूर है। इस नाटक के जरिए उनके विचारों और क्रांतिकारी जीवन में झांककर इस पूर्वाग्रह को भी मिटाने की हम कोशिश करना चाहते हैं,

जब भी स्वतंत्रता संग्राम पर विचार किया जाता है तो संघर्ष की दो धाराएं समझ में आती है- एक क्रांतिकारी धारा और दूसरी उदारवादी/ अहिंसात्मक धारा।

क्रांतिकारी धारा से हम अक्सर हिंसा को जोड़ते हैं। इस हिंसा का तर्क क्या है? एक सवाल भी है-हिंसा की क्रिया में कभी खुद को आहत करने का सवाल नहीं उठता, फिर ऐसा क्या था कि क्रांतिकारी खुद पर हुई हिंसा को हंसते-हंसते झेल गए?

यूनिवर्सिटी थियेटर

प्रस्तुत करते हैं

कौन आज़ाद हुआ?

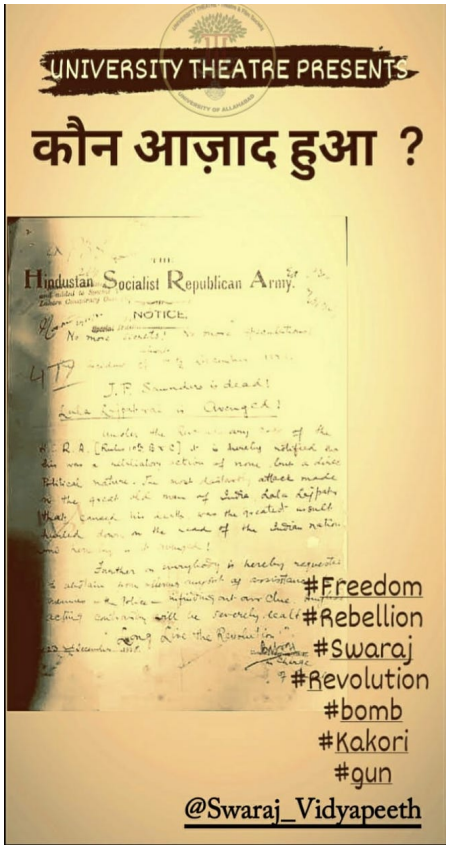

आज़ादी का अमृत महोत्सव

निर्देशकीय

नाटक करना हमारे लिए केवल प्रस्तुति करना भर नहीं हैं। इसीलिए अब तक की अपनी यात्रा में कोई सुगठित नाट्यालेख मंचित नहीं किया। दो प्रस्तुतियाँ हमने कहानियों के रूपांतरण पर की और दो प्रस्तुतियों का नया आलेख लिखा। कहानियों के रूपांतरण में भी ध्येय था कि सहभागिता से कहानी को प्रस्तुति आलेख में और फिर प्रस्तुति भाषा में बदला जाए। जब हमने गाँधी जी पर प्रस्तुति करने की सोची तो एक प्रक्रिया के तहत हमने आलेख लिखा था। आज के युवा सार्वजनिक सूचनाओं, अधिंकाश भ्रामक, से जो राय गाँधी जी के बारे में बनाते हैं वह राय क्या कायम रहेगी जब वे खुद गांधी को पढ़ेंगे? इस सवाल पर हमारा आलेख आधारित था। इस बार हमारा ध्येय यह देखना है कि भारत का क्रांतिकारी आंदोलन कैसा था? इस प्रस्तुति में हमारे अभिनेता लगभग उसी उम्र में हैं जिसमें HSRA के क्रांतिकारी थे। किताबों, सूचनाओं और इससे उपजे छात्रों के सवालों से बने आलेख को एक गतिशील और रोचक दृश्य भाषा में प्रस्तुत करना चुनौती है और ऐसे अभिनेताओं के साथ जिनको अभिनय का कोई रियाज़ नहीं है। इसमें हम किसी कहानी, किसी चरित्र, स्थिति के घात प्रतिघात और तनाव को नहीं प्रस्तुत कर रहे हैं। इसीलिए प्रस्तुति की भाषा गढ़ने में कोशिश की गई है कि बिखरना और बनना एक साथ आए और एक भ्रम निंरतर बना रहे। हम कहीं पहुंचना नहीं चाहते बल्कि हम अपने आज को अपने अतीत के सामने रखकर अपने ही उलझनों से रूबरू हैं। इस उलझन को विश्राम संगीत में मिलता है। दर्शकों तक इस भाषा में नाटक कितना पहुंचेगा हम अभी भी अनिश्चय में हैं? हम हमेशा प्रक्रिया में यक़ीन रखते हैं. रंगमंच का आनंद भी वही है.

प्रतिभागी

मंच पर- अभिषेक, प्रशंसा, प्रिंस, शिवा, अनुराग, शिवानी, हर्षिता, शिवम, बुद्धप्रिय, आदर्श, अजीत, अमिता, विवेक, सौरव, शिवानी, नीलेश, हर्ष, देवेश, राशि, विकास, सिंद्धात, सोमेश, स्नेहिल, विकल्प, पीयूष, अंकित, हिंमाशु, दिव्या, सलोनी, महिमा, आस्था, कृष्णा, आश्रुति, अदिति, दीपशिखा, अभिषेक,

मंच परे- योगिता, पल्लवी, आशिया, रविंकात, प्रकाश, चन्दन, ज्ञानेंद्र, रजनीश, स्वाति, विवेक, मुकेश, नीतेश, राकेश, प्रांशु, राज विक्रम और अमिता

आलेख समूह- आदर्श, अमिता, अपर्णा, राशि, बबली, हर्षिता, विदुषी, आदर्श और दिव्या

पोस्टर - पार्थ और कौस्तुभ

ब्रोशर-दिव्या प्रस्तुति निंयत्रण- प्रिंस

प्रस्तुति प्रबंधन- प्रदीप्त

अभिनय प्रशिक्षण- मोहम्मद जहाँगीर

विशेष सहयोग- प्रवीण शेखर

संगीत- जुगेश मुकेश गुप्ता

प्रकाश परिकल्पना- सिद्धार्थ

गीत- इप्टा, साहिर लुधियानवी, प्रेम धवन, अली सरदार जाफ़री

परिकल्पना और निर्देशक- अमितेश कुमार

यूनिवर्सिटी थिएटर के बारे में-

साल 2018 का अंत हो रहा था, सर्दियों की आमद होने वाली थी ऐसे में कुछ छात्र एकत्रित हुए इस ध्येय से कि विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रम से इधर उनके व्यक्तित्व के अन्य पहलुओं के विकास के लिए भी कोई मंच होना चाहिए, जहां वह सिलेबस की दुनिया के बाहर एक दूसरे से मिलकर अपने आत्म को तलाशें। इस खोज में उनके सामने विकल्प आया एक रंग समूह बनाने का। यह समूह इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्रों की एक स्वायत्त सांस्कृतिक पहल है। यह ध्यान में रखते हुए कि विश्वविद्यालय का अतीत इस क्षेत्र में भी उल्लेखनीय उपलब्धियों को संजोए हुए हैं। प्रस्तुति के सिलसिले की शुरुआत कहानी मंचन से हुई जिसके अंतर्गत दो कहानियों 'सिरी उपमा जोग' और 'भोलाराम का जीव' का मंचन हुआ। समूह ने श्रुति नाटक शैली की शुरुआत की जिसके तहत प्रेमचंद जी के जयंती पर 'कफन' कहानी का नाट्य पाठ हुआ। गाँधी जी के जीवन पर आधारित प्रस्तुति 'जब वी मेट गाँधी' की प्रस्तुति के बाद समूह ने श्रीकांत वर्मा के कविता संग्रह 'मगध' की प्रस्तुति की। 'यूटी की किताबशाला' किताबों पर चर्चा की शृंखला है। कोरोना काल में रेणु की कहानी पर वीडियो प्रस्तुति और बाद में मंचीय प्रस्तुति हुई। समूह तीन वर्षों में अपनी पांचवी प्रस्तुति के साथ प्रस्तुत है।

संरक्षण- डॉ. लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता, डॉ विनम्र सेन सिंह, डॉ सुजीत कुमार सिंह, डॉ बृजेश पांडे, डॉ. स्वप्निल श्रीवास्तव और सुमन शर्मा

आभार- डॉ. बसंत त्रिपाठी, डॉ. अमरेन्द्र त्रिपाठी, डॉ दीनानाथ मौर्य, डॉ जनार्दन, नीरज उपाध्याय, रिशु, शीतांशु भूषण, बैकस्टेज समूह और NCZCC

विशेष आभार- प्रो. सुरेश शर्मा